International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 02-03-2026, Accepted: 02-04-2026, Published: 17-04-2026
Volume 8, Issue 2, 2026, Page No. 22-23

अंधेरे का ताला उपन्यास में शिक्षित नारी का संघर्ष

डॉ. स्मृति उरांव
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, डॉ.सी.वी. रमन विश्वविद्यालय कोटा बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
भारतीय समाज में उच्च शिक्षा की वास्तविक दशा का चित्रण अंधेरे का ताला उपन्यास में बहुत ही रोचकता से ममता कालिया द्वारा चित्रित किया गया है। ममता कालिया अपने समकालिन सच्चाई और परिवेशगत जीवन दृश्टि को संवेदनशीलता का यथार्थ चित्रण करती है। भारतीय समाज सभ्यता और संस्कृति की वास्तविकता का समय सापेक्ष शब्दांकन आपके साहित्य की उपलब्धि है। प्रस्तुत उपन्यास महाविद्यालयीन जीवन की सच्चाई को उजागर करते हुए परिवेशगत बदलते हुए शैक्षिक सरोकार उजागर करता है। महाविद्यालय अध्यापक और छात्रों के आपसी व्यवहार अपने आप में पठनीय है। शिक्षा जैसे पवित्र स्थान पर भी समकालिन परिवेश में किस प्रकार उथल–पुथल हो रही है। जिसका प्रमाणित चित्रण उपन्यासकार ने एक दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत किया है।

मूल शब्दः समकालीन, शिक्षित नारी, सरोकार, अभिभावक, हमलेवार, नेतागिरी

प्रस्तावना

ममता कालिया ने अपने उपन्यास अंधेरे में ताला में नारी संघर्ष का चित्रण किया है। समकालीन विमर्श के माध्यम से नारी रिती–रिवाजों तथा परम्पराओं को तोड़ते हुए आगे बढ़ रही है। पहले नारी का जीवन मर्यादाओं से भरा हुआ था। अब नारी अपने जीवन में संघर्श करती हुई आगे बढ़ना चाहती है। समकालीन उपन्यासों में नारी को संघर्श करते हुए देखा गया है। इसलिए इससे स्पश्ट होता है कि नारी में जो गुण है, कौशल है उन्हें भुलाकर मात्र उसके रूप और रंग को देखा जाता है। जिस दिन नारी के गुण को देखा जाएगा उसी दिन उसे एक व्यक्ति का स्थान प्राप्त हो जाएगा। इसलिए स्त्री विमर्श स्त्रियों के लिए किया गया एक आन्दोलन है।

उपन्यास की शुरूआत में ही कॉलेज में बी.ए. की छात्रा के अभिभावक भाई के द्वारा अचानक हमले से घायल नन्दिता का संघर्श वर्तमान शिक्षा जगत में फैले भ्रश्टाचार का खुलासा भी करता है। नारी के इसी शिक्षा जगत में आये हुए संघर्शों को दर्शाया गया है। नन्दिता चक्रवर्ती कॉलेज की प्रधानाध्यापिका होने के नाते किसी भी छात्र के उपर अन्याय नहीं होने देती है। शिक्षा विभाग की बैठक में नये नियम बनाये जाते हैं। चालीस प्रतिशत से नीचे अंक पाने वाले छात्रों को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। 31 अगस्त के बाद भी प्रवेश नहीं दिया जाएगा तथा 75 प्रतिशत के नीचे उपस्थिति वाले छात्रों को भी परीक्षा में बैठने नहीं दिया जाएगा।

उपन्यास में अध्यापिकाओं छात्राओं और अन्य कर्मचारियों के साथ–साथ ही उपन्यास की नायिका नंदिता कॉलेज की प्रधानाध्यापिका के जीवन को चित्रित किया गया है। नारी कितनी भी आधुनिक तथा शिक्षित क्यों न हो समाज में उसे नैतिक मूल्यों का आचरण करना ही पड़ता है। नारी कई संघर्शों से जूझ रही है। लेकिन फिर भी वह स्वतंत्र अस्तित्व पाने के लिए जागरूक भी है। उपन्यास में किसी न किसी समस्याओं से नारी संघर्श करती हुई नजर आती है।

महाविद्यालय में एक लड़की को प्रवेश न मिलने के कारण उसके अभिभावक भाई के द्वारा नंदिता के उपर अचानक हमले से घायल नंदिता का संघर्श वर्तमान शिक्षा जगत में फैले भ्रश्टाचार का खुलासा भी करता है। नारी के इसी शिक्षा जगत में आये हुए संघर्शों को दर्शाया गया है। नंदिता चक्रवर्ती कॉलेज की प्रधानाध्यापिका होने के साथ एक शिक्षित तथा अपने कर्तव्य के प्रति सजग नारी है। उपन्यास में लड़की को प्रवेश न मिलने से आक्रोशित अभिभावक नंदिता के सिर पर पेपरवेट से मार देते हैं। घायल नंदिता इसकी शिकायत स्वयं करने पुलिस के पास जाती है। नंदिता के कोई भी गलती नहीं होने के बावजूद भी उसे अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता हैं। पुलिस चौकि प्रभारी निरिक्षक नंदिता को ही बार–बार प्रश्न पुछकर परेशान करता हुआ नजर आता है। नंदिता चिढ़कर कहती है कि एक तो आप अपना काम नहीं कर रहे हैं दूसरा आप फिजुल की तोहमत लगा रहे हैं।

हमलेवर को ढूंढने के बजाय नंदिता को ही परेशान किया जाता है। नंदिता उसके कॉलेज में विषय के अनुरूप ही सात प्राध्यापिकाओं की मांग रख लेती है। जिसे की विषय को पढ़ाने में आसानी हो जाये तथा छात्राओं को भी अच्छे अंक प्राप्त हो सके।

अग्रवाल जी प्रिसिपल नंदिता चक्रवर्ती का अपमान कर देते हैं। कॉलेज का भला चाहने वाली नंदिता को प्राध्यापिकाओं की मांग करते हुए संघर्श करना पड़ता है। प्रबंधक अपनी मनमानी करते हुए कॉलेज को चलाना चाहता है। वही तय करते हैं कि अध्यापिकाओं को कितना वेतन देना है। अचानक से वह नोटिस निकालते हुए उन्हें नौकरी छोड़ने के लिए भी कहते हैं ''अब तुम मुझे कानून पढ़ाओगी''। तुम्हे तो तनखा मिलती है न? बस, चुपचाप तनखा लेती रहो। नौकरी के साथ नेतागिरी नहीं चलती। अग्रवाल की बातों का नंदिता को बहुत बुरा लग जाता है। अग्रवाल अपना वर्चस्व कायम रखना चाहता है। अध्यापिकाओं की फिक्र करने वाली नंदिता को उनके सामने चुप बैठना पड़ता है। कॉलेज में काम करने वाली कर्मचारी महिला ननकी को भी आधा ही वेतन मिलता है। वेतन के लिए संघर्श करने वाली ननकी को भी कॉलेज की अध्यापिकाओं द्वारा भला बुरा सुनना पड़ता है। उन्हें ऐसा लगता है कि, उच्च पद पर काम करने वाले लोगों को कर्मचारियों से बातचीत नहीं करनी चाहिए बल्कि उनको आदेश देते हुए उनकी जगह पर ही रखना चाहिए। यह तो समाज में परम्परा ही बन चुकी है। इसी परम्परा का उदाहरण तिवारी मैडम जो कि कॉलेज की अध्यापिका है। तिवारी मैडम ननकी को देखते ही कहती है ''यह मेज साफ है कि तुमने मेज के नीचे जाले ही जाले लगे हैं कुर्सी पर इतनी धूल है। मेरी सारी साड़ी खराब हो गई। सफाई का काम मेरा है या तुम्हारा।''

इस तरह तिवारी मैडम ननकी को हमेशा सुनाया करती है। क्या किसी निम्न कर्मचारियों की कोई अपना स्वाभिमान नहीं होता इस तरह की बातों से उनको भी बुरा लगता है। लेकिन यह समाज

की सत्य बात है। उच्च पद पर बैठे लोग कभी निम्न कर्मचारियों के मजबूरी को समझने का प्रयास ही नहीं करना चाहते। इसी तरह ननकी की भावनाओं को अध्यापिकाओं को समझनी चाहिए। नंदिता ने बिटोला नामक लड़की का अंकपत्र प्राध्यापक मानिक वर्मा को दिया है। बिटोला को संस्कृत में अच्छे अंक प्राप्त हो चुके हैं। लेकिन संस्कृत विषय में प्रवेश देने के लिए वर्मा जी मना करते हैं। वर्मा जी चाहते हैं कि, आप अपना कोटा पूरा कीजिए लेकिन संस्कृत विषय को न दीजिएगा। क्योंकि वह अछूत है। नंदिता अपने मत से टस से मस न हुई। वह चाहती है कि बिटोला जैसी होनहार लड़की को उसका विषय चुनने का हक है। चाहे कुछ भी हो जाये वह बिटोला की मदद करेगी। उसने कहा हम समाज सुधार की कोरी बातें करते हैं, जब कोई चुनौती आती है तो पीछे हट जाते हैं। नंदिता बिटोला की जिम्मेदारी लेती है। वह सोचती है कि समाज में चल रही कुरीतियां तथा कुप्रथाओं के कारण बिटोला जैसी लड़कीयों को इनका सामना करना पड़ता है।

निष्कर्ष

यह स्पश्ट होता है कि वर्तमान भारत में शिक्षित नारी आर्थिक रूप से स्वावलम्बी तो हो गयी है लेकिन परम्पराओं के बाहर न निकलने के कारण उन्हें कई तरह के संघर्शों का सामना करना पड़ता है। नंदिता जैसे शिक्षित नारी को भी अपने विचारों को रखने का अधिकार नहीं दिया जाता है। और ना ही बिटोला जैसी होशियार लड़कियों को पढ़ाई में अड़चन पैदा की जाती है। ''अंधेरे का ताला'' उपन्यास की नंदिता, बिटोला तथा कर्मचारी ननकी को उपन्यास में संघर्श करते हुए पाया जाता है।

संदर्भ सूची

1. आधुनिक स्त्री विमर्श, डॉ. ललिता एन राठौर
2. हिन्दी लेखिकाओं के कथा साहित्य में नारी जीवन डॉ. मनीशा
3. अंधेरे का ताला, ममता कालिया
4. इतिहास में स्त्री, सुमन राजे।
5. समकालीन हिन्दी साहित्य और नये विमर्श, डॉ. प्रमोद कोवप्रत।